अक्रम यूथ

दिसम्बर 2021 हिन्दी

दादा भगवान परिवार

स्पर्धा

अनुक्रमणिका

04 स्पर्धा

05 एपिसोड 01
पहला दिन

07 एपिसोड 02
देखा देखी

10 एपिसोड 03
उल्टा परिणाम

14 एपिसोड 04
रेस-कोर्स

15 दादाश्री के पुस्तक की झलक

17 एपिसोड 05
हेल्दी कॉम्पीटिशन

18 न्यूज़ पेपर

20 ज्ञानी विद् यूथ

22 एपिसोड 06
कोई हमसे स्पर्धा करे तब?

दिसम्बर **2021**
वर्ष : 9, अंक : 8
अखंड क्रमांक : 104

संपर्क सूत्र :
ज्ञानी की छाया में,
त्रिमंदिर संकुल, सीमंधर सिटी,
अहमदाबाद-कलोल हाइवे,
मु.पो. - अडालज,
जिला : गांधीनगर-382421, गुजरात
फोन : (079) 39830100

email: akramyouth@dadabhagwan.org
website: youth.dadabhagwan.org
store.dadabhagwan.org

संपादक : डिम्पल मेहता

Printer & Published by
Dimplebhai Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421.
Taluka & Dist - Gandhinagar

Owned by : Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421.
Taluka & Dist - Gandhinagar

Published at : Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421.
Taluka & Dist - Gndhinagar

Printed at : Amba Multiprint
B-99, GIDC, Sector-25,
Gandhinagar – 382025. Gujarat.
Total 24 Pages with Cover page

Subscription
Yearly Subscription
India :200 Rupees
USA: 15 Dollars
UK: 12 Pounds
5 Years Subscription
India : 800 Rupees
USA: 60 Dollars
UK: 50 Pounds
In India, D.D. / M.O. should be drawn in favour of "Mahavideh Foundation" payable at Ahmedabad.

© 2021, Dada Bhagwan Foundation.
All Rights Reserved

संपादकीय

प्रिय पाठक मित्रों,

स्पर्धा कहाँ नहीं होती? बचपन से लेकर अब तक जीवन में हर कदम पर स्पर्धा चलती ही रहती है। बचपन में खिलौनें के लिए स्पर्धा, बड़े होने पर पढ़ाई के लिए। फिर अच्छा दिखने के लिए, करियर के लिए, जॉब में प्रमोशन के लिए या फिर सोसाइटी में स्टेटस के लिए स्पर्धा चलती रहती है।

दूसरे से आगे निकलने के लिए, अपने आपको दूसरों से ज्यादा होशियार साबित करने के लिए या फिर दूसरों के मुकाबले अपना इम्पॉरटन्स बढ़ाने के लिए निरंतर स्पर्धा चलती ही रहती है। आगे जाकर स्पर्धा में से ईर्ष्या का जन्म होता है और फिर अंतहीन पीड़ा उठानी पड़ती है जिससे कई बार तो बैर भी बँध जाता है। और फिर अंत में आनंद चला जाता है, सही है न?

मित्रों, कई बार हमें ऐसा लगता है कि मैं तो स्पर्धा करता ही नहीं हूँ। तो यह अंक अवश्य पढ़ें। इस अंक में एक वेब स्टोरी के एपिसोड द्वारा हम स्पर्धा में कैसे और क्यों पड़ जाते हैं ? उसके लक्षण क्या हैं ? उससे क्या नुकसान होता है ? यह समझेंगे और साथ ही साथ स्पर्धा से कैसे बाहर निकल सकते हैं इसकी प्रैक्टिकल समझ भी हम प्राप्त करेंगे।

- डिम्पल भाई मेहता

स्पर्धा

स्पर्धा को समाप्त करने के लिए ज्ञान की ज़रूरत होती है। पूर्ण ज्ञानी ही स्पर्धा रहित हो सकते हैं। क्योंकि स्पर्धा का माल खाली करते-करते बहुत समय निकल जाता है।

नीरू माँः जीवन में कभी भी मन में स्पर्धा पैदा ना हुई हो ऐसा हो ही नहीं सकता। हमें भी हुई थी, भाई... होती ही है!! जब तक अज्ञानता है तब तक स्पर्धा होती ही है! ज्ञान के बाद भी स्पर्धा का भरा हुआ माल निकलता ही है। तब खुद ऐसा मानता है कि "मैं स्पर्धा करता हूँ, अच्छा है, बुरा है, ऐसा है, वैसा है।" चूँकि यही मन में चलता रहता है इसलिए स्पर्धा का माल खाली नहीं हो पाता। स्पर्धा को समाप्त करने के लिए ज्ञान की ज़रूरत होती है। पूर्ण ज्ञानी ही स्पर्धा रहित हो सकते हैं। क्योंकि स्पर्धा का माल खाली करते-करते बहुत समय निकल जाता है। स्पर्धा का जन्म द्वेष में से होता है। द्वेष परिणाम! राग में से स्पर्धा उत्पन्न नहीं होती, द्वेष में से स्पर्धा उत्पन्न होती है। राग में से द्वेष उत्पन्न होता है और द्वेष में से फिर स्पर्धा उत्पन्न होती है।

जीवन में सभी कदम-कदम पर स्पर्धा में लगे ही रहते हैं। स्पर्धा यानी 'दौड़' जिसे घुड़दौड़ कहते हैं न! "रेस-कोर्स" सभी रेस-कोर्स में दौड़ रहे हैं। कैसे मैं सब से आगे निकल जाऊँ, कैसे दूसरों को हराकर आगे बढ़ूँ मेरी तरक्की हो और दूसरों का पतन हो। हमें कोई न कोई मिल ही जाता है हमारे साथ रेस-कोर्स में दौड़ने के लिए। या तो वह दौड़ता होता है और हम उससे आगे निकल जाना चाहते हैं या फिर हम दौड़ते होते हैं और वह बाद में आकर हमें हराना चाहता है। किसी न किसी तरह से कहीं से भी स्पर्धा के लिए निमित्त मिल ही जाता है।

एपिसोड 01

पहला दिन

प्रोफेसर मैथ्यूः नमस्ते मित्रों! नीरू माँ के सत्संग से आप समझ ही गए होंगे कि आज मैं किस विषय पर चर्चा करने आया हूँ। हाँ, "स्पर्धा"! इस टॉपिक पर मुझे एक रियल स्टोरी याद आती है जो मैं आप सभी को बताना चाहता हूँ।

तो शुरू करते हैं इस वेब स्टोरी के पहले एपिसोड से।

दृश्य 1 : फ्रेशर पार्टी

राज : फ्रेन्ड्स... मैं कॉलेज की फुटबॉल टीम में खेलना चाहता हूँ।

मित्र 1 : क्यों मज़ाक करते हो! क्या तुम फुटबॉल खेलना जानते भी हो?

राज : अरे, तुम जानते नहीं, मैं अपने स्कूल का चैम्पियन था। सब मुझे जूनियर मेस्सी कहकर बुलाते थे, मेरे कोच भी!

मित्र 1 : रियली? वाउ! तब तो हम सब तुम्हारा फुटबॉल मैच देखने ज़रूर आएँगे।

(उसी समय आकाश पार्टी में प्रवेश करता है।)

आकाश : हलो फ्रेन्डस!

मित्र 2 : हेय आकाश, कॉन्ग्रैट्स। भाई, तुम तो बहुत फेमस हो गए हो!

मित्र 3 : हाँ, सुना है कि तुम्हारे यूट्यूब चैनल को दस हज़ार सब्सक्राइबर्स मिले हैं! तुमने इसके लिए बहुत मेहनत की होगी, है न?

आकाश : थैंक्स मेहनत के साथ-साथ स्मॉर्टनेस भी चाहिए! राहुल को ही देख लो। हमने एक साथ चैनल शुरू किया था। लेकिन वह बेचारा अभी भी हज़ार सब्सक्राइबर्स पाने के लिए जूझ रहा है। *(सब हँसते हैं। राज को हँसी नहीं आती।)*

राज : आकाश, ऐसा लगता है तुम्हारे ग्रह तुम्हारे फेवर में थे।

आकाश : अच्छा? तो चलो, देखते हैं कि तुम्हारे ग्रह तुम्हारे फेवर में हैं या नहीं!

राज : क्या तुम मुझे चैलेन्ज कर रहे हो?

आकाश : तुम्हें जो समझना हो समझो।

राज : ओके! चलो, देखते हैं। मैं तुमसे भी अधिक सब्सक्राइबर्स हासिल करके दिखाऊँगा! वह भी तुमसे कम समय में।

मित्र 1 : लेकिन तुम्हें तो फुटबॉल टीम में शामिल होना है, उसका क्या...?

दृश्य 2 : मिस्टर एन्ड मिस फ्रेशर कॉम्पीटिशन

एंकरः मित्रों, आप बेसब्री से जिसका इंतज़ार कर रहे थे वह घड़ी आ गई है। हाँ, इस वर्ष के मिस्टर फ्रेशर और मिस फ्रेशर का खिताब देने की! तो इस वर्ष की मिस फ्रेशर है....

(राशि स्टेज पर जाने के लिए अपने बाल और कपड़े ठीक करती है...)

एंकरः मिस फ्रेशर हैं...मिस... अंकिता रॉय!

राशि (स्वाति को) : ये क्या! यह कैसे हो सकता है? कौन है ये अंकिता?

स्वातिः 'अंकिता रॉय', वह स्कूल में हमारे साथ ही थी, हमारे बैच की ऑल राउंडर! आज भी स्कूल में उसे सब याद करते हैं। इन्स्टाग्राम पर उसके पंद्रह हज़ार फॉलोअर्स हैं और उसकी हर रील पर कम से कम दो लाख व्यूज़ तो मिलते ही हैं। उसने एक मेकअप कम्पनी के साथ कोलैबोरेशन भी किया है। (स्टेज पर अंकिता का मिस फ्रेशर के तौर पर सम्मान किया जाता है)

राशि (मन में): हं! ऐसा तो कुछ खास नहीं है उसमें...कम ऑन! मैं अंकिता से ज्यादा सुंदर हूँ और अगर चाहूँ तो उससे भी ज्यादा फेमस हो सकती हूँ।

(स्टेज से वापस आती हुई अंकिता के लिए सभी खुश थे। मिस फ्रेशर का मुकुट उसके चेहरे पर चार चाँद लगा रहा था। यह देखकर राशि को उस पर गुस्सा आता है और भीड़ में किसी को पता न चले ऐसे उसने अंकिता के रास्ते में इस तरह पैर रखा कि वह लड़खड़ा जाती है। ये देखकर सभी हँसते हैं।)

देखा मित्रों? वैसे तो राज फुटबॉल चैम्पियन था। लेकिन आकाश की सफलता देखकर उसके मन में स्पर्धा उत्पन्न हुई। ऊपर से आकाश ने उसे चैलेन्ज भी किया। तो राज ने भी बिना कुछ सोचे-समझे फुटबॉल भूलाकर वीडियो बनाने का चैलेन्ज स्वीकार कर लिया। दूसरी तरफ, राशि भी अपनी हार स्वीकार नहीं कर पाई। ईर्ष्या और जलन के मारे राशि का अपने व्यवहार पर कंट्रोल नहीं रहा और वह अंकिता का नुकसान कर बैठी। चलो, आगे देखते हैं कि राज और राशि देखा देखी में किस तरह और आगे बढ़ते हैं।

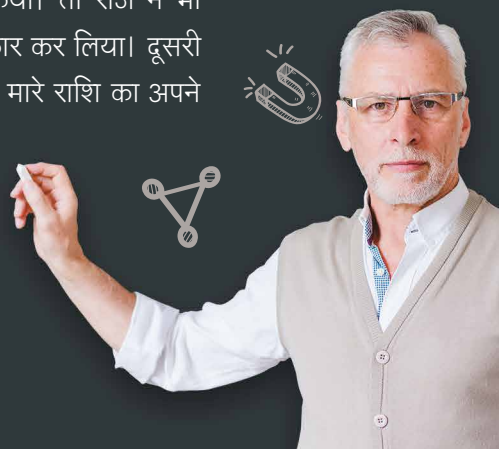

एपिसोड 02

देखा देखी

दृश्य 1: कॉलेज

(राशि और उसकी फ्रेन्ड स्वाति कॉलेज के बाद कैन्टीन में बैठे थे, राशि सोचती है।)

राशि (मन में): मैंने अंकिता की हर एक स्टाइल, स्टेप, लगभग सब कुछ ट्राइ किया है, फिर भी मेरे फॉलोअर्स बढ़ ही नहीं रहे।

स्वातिः अरे! क्या तुमने अंकिता की नई पोस्ट देखी?

राशिः हाँ, उसे एक घंटे में पाँच सौ लाइक्स मिले हैं। मुझे समझ में नहीं आता कैसे? मुझे लगता है कि उसने लाइक्स और कमेन्ट्स खरीदे हैं।

स्वातिः तुम्हें कैसे पता चला कि उसने खरीदे हैं?

राशिः मैंने उसे स्टोक...!! यानी थोड़ी देर पहले ही मैंने अंकिता को डींगे मारते हुए सुना था।

स्वाति : राशि...तुम जब से अंकिता से मिली हो तब से तुम्हारा कैमरा उसी पर है!

दृश्य 2: घर पर

(राज अपना यूट्यूब चैनल खोलता है और अपने पहले वीडियो की तैयारी करता है)

राज : कहाँ से शुरू करूँ? वीडियो के लिए कौनसा टॉपिक लेना चाहिए? हमम...आकाश का वीडियो ही देख लेता हूँ।

राज : ये लो!! इस कॉमेडी वीडियो को बनाने में कौनसी बड़ी बात है? मैं आकाश से भी अच्छे वीडियोज़ बनाऊँगा।

(राज प्लॉटिंग, स्क्रिप्टिंग, कैमेरा वर्क और एडिटिंग करके बहुत मेहनत से वीडियो बनाता है)

राजः वाह!! कितना अच्छा वीडियो बना है। आइ एम श्योर मुझे बहुत सारे लाइक्स और कमेन्ट्स मिलेंगे। आकाश को भी पता चलेगा कि उसने किसे चैलेन्ज किया है!

दृश्य 3: घर

(राशि अंकिता के प्रोफाइल पर वॉच रख रही होती है, तभी उसकी नज़र अंकिता के इन्स्टाग्राम स्टोरी पर पड़ती है।)

अंकिता की स्टोरी : क्या मुझे जनरल सेक्रेटरी के लिए खड़े रहना चाहिए?

- हाँ, हम तुझे वोट देंगे।
- नहीं।

राशि : क्या? अंकिता और जनरल सेक्रेटरी...? अगर वह जीत गई तो मुझे उसके अधीन काम करना पड़ेगा! अब तो मैं भी जनरल सेक्रेटरी की पोस्ट के लिए नाम लिखवाऊँगी।

दृश्य 4: कॉलेज

(दूसरे दिन सुबह उठकर राज सब से पहले अपना वीडियो चेक करता है। लेकिन यह क्या? वीडियो को बहुत कम लाइक्स और व्यूज़ मिले थे और बहुत सारे नेगेटिव कमेन्ट्स मिले थे। यदि लोग यह देखेंगे तो खराब इम्प्रेशन पड़ेगा! इसी चिंता में वह पैसे देकर लाइक्स और सबस्क्राइबर्स खरीदता है। फिर खुश होकर राज कॉलेज पहुँचता है।)

राजः मित्रों, क्या तुमने मेरा नया वीडियो देखा? 500 व्यूज़ हो गए।

मित्र 1: ओह राज, तुम्हें नहीं लगता कि तुम्हारा वीडियो थोड़ा बोरिंग है?

आकाशः बोरिंग ही नहीं, बल्कि ऐसा लगता है कि किसी छोटे बच्चे ने इसे बनाया है। ऐसे वीडियो पर किसी को हँसी भी कैसे आ सकती है?

(सभी राज पर हँसने लगते हैं)

राजः मुझे तुम्हारी तारीफ़ की कोई ज़रूरत नहीं है।

दृश्य 5: कॉलेज केम्पस

राशि (घोषणा करते हुए): डियर फ्रेन्डस, आप सभी जानते हैं कि मैं जनरल सेक्रेटरी के पद के लिए खड़ी हुई हूँ, केवल आप सब के लिए! मैं आप सभी को विश्वास दिलाती हूँ कि मैं आपके प्रॉब्लम्स का समाधान करने का पूरा प्रयत्न करूँगी, दूसरों की तरह झूठे प्रॉमिस नहीं करूँगी! (अंकिता की तरफ देखकर मुँह बनाती है)

अंकिताः झूठे प्रॉमिस? तुम कहना क्या चाहती हो?

राशिः लेकिन मैंने तुम्हारा नाम कहीं लिया?

स्वाति (दौड़कर आती है): राशि, राशि...मैडम तुमको स्टाफ रूम में बुला रही है।

(राशि स्टाफ रूम में जाती है जहाँ सभी शिक्षक बैठे होते हैं)

राशिः मे आइ कम इन?

मैडमः आओ राशि! बैठे। क्या तुम जनरल सेक्रटरी की पोस्ट के लिए खड़ी होना चाहती हो?

राशिः हाँ, मैम।

मैडमः ओके, इस पोस्ट के लिए तुम्हारी क्षमता को जानने के लिए हमने तुम्हारा इन्टरव्यू लेने का सोचा है।

राशिः श्योर मैम, मैं किसी भी इन्टरव्यू के लिए तैयार हूँ।

मैडमः ठीक है। तो बताओ, किसी दूसरे केन्डिडेट के बदले हम तुम्हें क्यों सिलेक्ट करें?

राशिः मुझे विश्वास है कि मेरे पास वह सभी गुण और अनुभव हैं जिनकी आप इस पोस्ट के लिए तलाश कर रहे हैं। मैं कॉलेज में डिसिप्लिन बनाए रखूँगी जो कॉलेज की उन्नति में काम आएगा। मेरे सजेशन दूसरे केन्डिडेट से अलग हैं। जैसे कि अंकिता लाइब्रेरी का टाइम बढ़ाने के लिए कह रही है लेकिन हकीकत में वहाँ सब टाइम वेस्ट करते हैं।

(इन्टरव्यू आगे बढ़ता है)

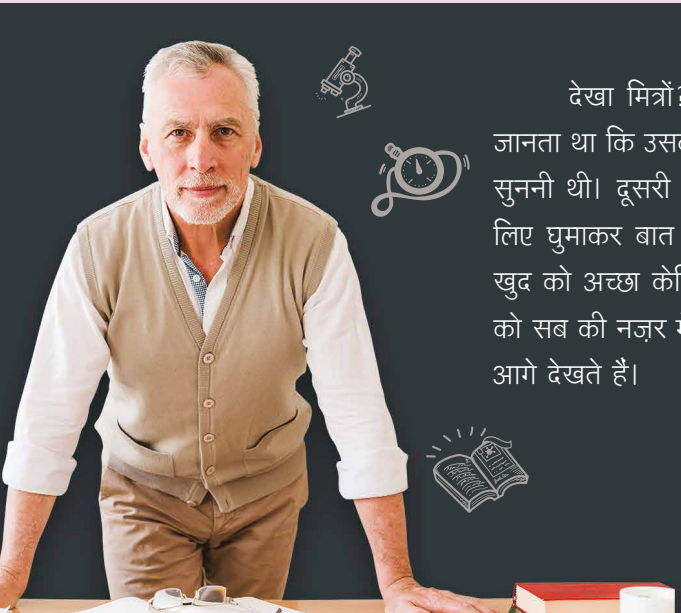

देखा मित्रों? राज ने व्यूज़ और लाइक्स खरीदे क्योंकि वह जानता था कि उसका काम इतना अच्छा नहीं है, फिर भी उसे तारीफ सुननी थी। दूसरी ओर, राशि ने जनरल सेक्रेटरी का पद जीतने के लिए घुमाकर बात करते हुए अपनी तुलना अंकिता के साथ करके खुद को अच्छा केन्डिडेट साबित करने का प्रयत्न किया और अंकिता को सब की नज़र में नीचे गिरा दिया। ऐसा है स्पर्धा का स्वरूप। अब आगे देखते हैं।

एपिसोड 03

उल्टा परिणाम

दृश्य 1: कॉलेज

स्वातिः कॉन्ग्रैट्स राशि! तुम जनरल सेक्रेटरी बन ही गई। पार्टी कब दे रही हो?

राशिः ओह! थैंक यू। पार्टी? हाँ, श्योर।

स्वातिः तो सेक्रेटरी मैडम, यह पोस्ट जीतने पर कैसा लग रहा है?

राशिः सब से अच्छी बात तो यह है कि मुझे अंकिता के अधीन काम नहीं करना पड़ेगा। जब मेरा नाम अनाउन्स हो रहा था तब अंकिता का चेहरा तो देखने लायक हो गया था।

दृश्य 2: फुटबॉल कोर्ट

(जब आकाश और कॉलेज के दूसरे लड़के फुटबॉल कोर्ट में प्रैक्टिस कर रहे थे तब राज पास वाले बेन्च पर बैठकर मन ही मन खुद से बातें कर रहा होता है।)

राज : राज, ये तुम क्या कर रहे हो!! फुटबॉल टीम में शामिल होने के बजाय चैनल के पीछे अपना समय बर्बाद कर रहे हो। तुम्हारा यूट्यूब चैनल भी अच्छा नहीं चल रहा है। आकाश तो कई सालों से मेहनत कर रहा है। तुम उसे थोड़े से समय में हरा नहीं पाओगे।

(जब राज गहरे विचारों में डूबा हुआ था तभी अचानक ही एक बॉल उसकी तरफ आया। निराशा से उसने बॉल को इतनी ज़ोर से लात मारी कि गोल हो गया।)

कोच : राज, तुम टीम में कब से शामिल होने की सोच रहे हो?

राज (मुस्कुराते हुए) : हाँ सर, अभी से ही।

(राज और आकाश एक-दूसरे की ओर देखते हैं)

राज : वीडियो में भले ही तुम मुझसे आगे हो पर मैं तुम्हें फुटबॉल में दिखाऊँगा कि तुम्हारा सामना किससे हुआ है।

आकाश : मैं भी देखता हूँ कि गेम में राज किस तरह गोल बनाता है।

दृश्य 3: कॉलेज

मित्र 1 : अरे!! जल्दी से वॉट्सऐप चेक करो, परीक्षा का टाइम टेबल आ गया है।

स्वाति : राशि, तुम्हें तो चिंता करने की ज़रूरत ही नहीं क्योंकि तुमने तो पहले से ही तैयारी कर ली होगी, है न?

राशि : ऑफ कोर्स। और जिस तरह मैं जनरल सेक्रेटरी बनी हूँ ऐसे ही इस परीक्षा में भी फर्स्ट आऊँगी।

(अंकिता वहाँ से गुज़रते हुए सबकुछ सुन लेती है।)

अंकिता (मन में) : भले ही राशि ने जनरल सेक्रेटरी की पोस्ट जीत ली हो लेकिन किसी भी हालत में मैं उसे परीक्षा में मुझसे आगे आने नहीं दूँगी।

राशि (मन में) : फर्स्ट आने के लिए मुझे अंकिता को हराना ज़रूरी है। मैंने तो कोई तैयारी शुरू ही नहीं की है, इसलिए कोई प्लान बनाना पड़ेगा। कैसा हो अगर मैं अंकिता की पढ़ने की स्टाइल कॉपी करूँ तो?

(राशि अपने पढ़ाई करने का तरीका बदलकर अंकिता का तरीका अपनाती है। पहले वह देर रात तक जागकर पढ़ाई करती थी और अब वह सुबह जल्दी उठती है। पहले वह अकेले पढ़ाई करती थी, उसके बदले अब ग्रुप में पढ़ाई करती है। समझकर पढ़ने की बजाय रटना शुरू कर देती है।)

(कुछ दिनों बाद, परीक्षा आ जाती है। राशि के अंकिता की तरह पढ़ने के कारण उसका सिलेबस पूरा नहीं हो पाता। इसलिए घबराहट के कारण राशि कॉपी करने के लिए परीक्षा में चिट लेकर जाती है। दूसरी तरफ अंकिता और अधिक मेहनत करती है। पहला नंबर लाने के लिए या कुछ नया सीखने के लिए नही, बल्कि सिर्फ राशि को हराने के लिए ऐसा करती है।

अंत में परीक्षा का रिज़ल्ट आता है। राशि को सिर्फ 70% आते हैं। और अंकिता टॉप करती है इसलिए सभी मित्रों को पार्टी देती है।)

अंकिता : मित्रों, मैंने टॉप किया इस खुशी में आज शाम की पार्टी पक्की, (मन में -'और राशि को हराया इसलिए...')

दृश्य 4: फुटबॉल कोर्ट

(कॉलेज में फुटबॉल स्पर्धा का आयोजन हुआ, जिसमें राज और आकाश एक ही टीम में थे। लेकिन टीम के लिए खेलने के बजाय वे एक-दूसरे के खिलाफ दुश्मनों की तरह खेलने लगे।)

राज : आकाश, मुझे बॉल पास करो!

आकाश : नहीं, गोल तो मैं ही करूँगा।

(अंत में उनकी टीम हार जाती है। हार के लिए दोनों एक-दूसरे को ज़िम्मेदार ठहराते हैं। बात हाथापाई तक पहुँच जाती है। प्रोफेसर मैथ्यू और कोच दोनों को अलग करते हैं और कोच दोनों को बहुत डाँटते हैं।)

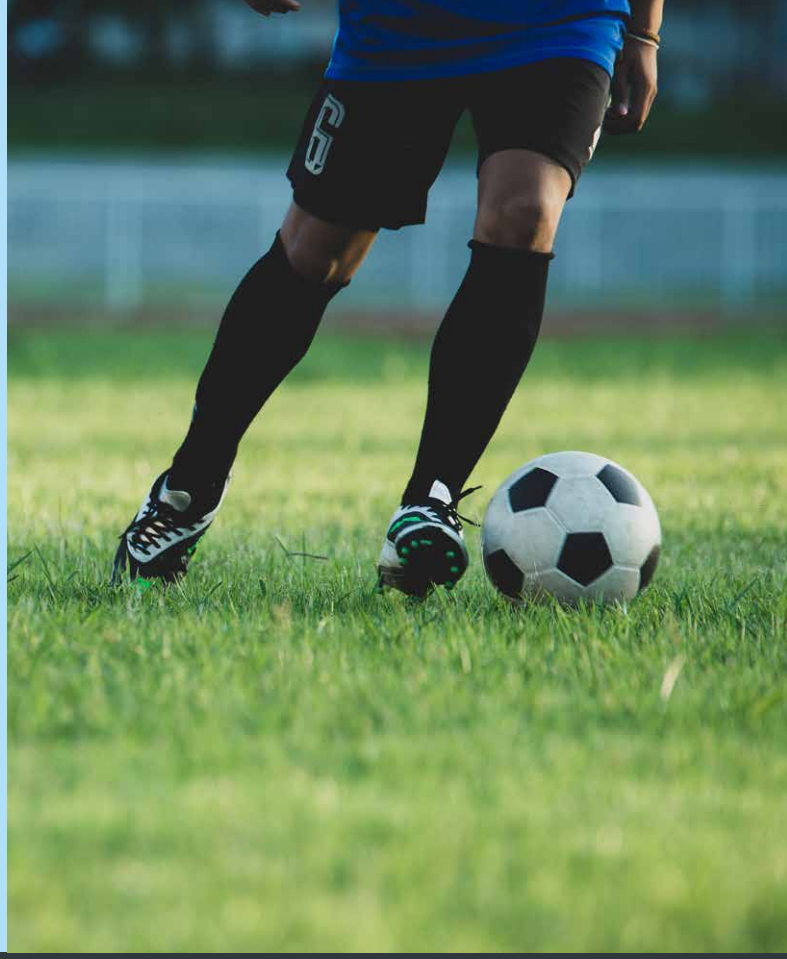

मित्रों देखा ना आपने, राज को भले ही यूट्यूब पर सफलता नहीं मिली लेकिन फिर भी उसने आकाश के साथ स्पर्धा करना जारी रखा। आकाश भी अपने अहंकार के कारण स्पोर्ट्समैनशिप भूल गया। दोनों ही अपनी सफलता के लिए खेल के नियमों को भूलाकर अपनी टीम में पूरक होने के बजाय एक-दूसरे के खिलाफ खेलने लगे। दूसरी तरफ, राशि ने भी अंकिता के साथ अनहेल्दी कॉम्पीटिशन करना जारी रखा। उसका फोकस अंकिता पर ही था, इसलिए उसने अपने पढ़ाई के तरीके को छोड़कर अंकिता की तरह पढ़ना शुरू किया। अंकिता भी टॉप आने के घमंड में डूबकर ऐसा दिखावा करने लगी जिससे राशि को और अधिक ईर्ष्या हो। इसका परिणाम यह हुआ कि चारों एक-दूसरे से आगे निकलने के लिए अपनी मर्यादा भूल गए।

(सोचते हुए... यह स्पर्धा अब भयानक रूप ले रही है। मुझे कुछ करना होगा।)

स्पर्धा के परिणाम

स्पर्धा से समय और शक्ति दोनों बर्बाद होते हैं।

प्रतिस्पर्धी दुश्मन जैसा लगता है।

अपना ओरिजिनल व्यक्तित्व खो जाता है।

जो स्पर्धा में बड़ा बनने जाता है वह अपने लक्ष्य से भटक जाता है।

मित्र और संबंधी दूर होते जाते हैं।

स्पर्धा करने वाले को सिर्फ अपना प्रतिस्पर्धी ही दिखाई देता है।

स्पर्धा करने से मानवता और नैतिकता खो जाती है।

एपिसोड 04

रेस-कोर्स

(प्रोफेसर मैथ्यू राज, राशि, आकाश और अंकिता को मैसेज करते हैं। सब को अपने फोन पर नोटिफिकेशन मिलता है।)

प्रोफेसर मैथ्यू : शाम 4:00 बजे संयोग कैफे में मुझसे आकर मिलो।

राज, राशि, आकाश, अंकिता : ओके सर!

दृश्य 1 - कैफे - All together

राज (मन में) : अरे, आकाश यहाँ कैसे?

राशि (मन में) : अंकिता भी है?

प्रोफेसर मैथ्यू : मैं जानता हूँ कि आप लोगों के मन में बहुत सारे सवाल हैं। चलो, सबसे पहले यह घोड़े की रेस देखेंगे फिर बातें करेंगे।

प्रोफेसर : मैं चाहता हूँ कि तुम सब मेरे सवाल का जवाब दो। अभी स्क्रीन पर तुम सब ने जो रेस देखी उससे क्या सीखा?

(सब एक-दूसरे का मुँह देखने लगे)

प्रोफेसर मैथ्यू : एक किताब में इसका बहुत अच्छा जवाब है। उस किताब का वह हिस्सा मैं तुम्हें बताता हूँ, इसे पढ़कर आप लोगों को एक नया दृष्टिकोण मिलेगा।

दादाश्री के पुस्तक की झलक

दौड़ते हैं सभी, इनाम एक को

प्रश्नकर्ता : हर एक की ऐसी इच्छा होती है कि, 'मैं कुछ बनूँ' और यहाँ आपके पास ऐसी इच्छा होती है कि 'मैं कुछ भी नहीं बनूँ, विशेषता बिल्कुल नहीं होनी चाहिए।' व्यवहार में ऐसा रहता है कि मैं कुछ हूँ और मुझे कुछ बनना है।

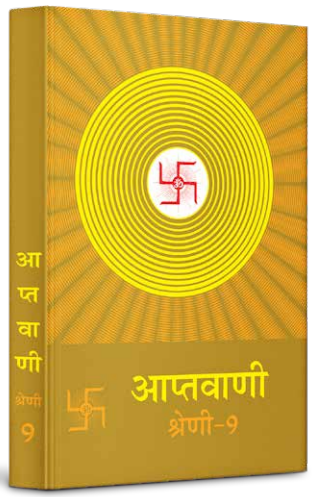

दादाश्री : क्योंकि वहाँ 'रेस-कोर्स' में पड़ जाते है न! इतने सारे घोड़े दौड़ते हैं, उनके साथ यह भी दौड़ता है। 'अरे, तू बीमार है, बैठ रह न चुपचाप!' जबकि वे तो 'स्ट्रोंग' घोड़े हैं। और उसमें भी इन सभी घोड़ों में, पहले नंबर वाले को ही इनाम मिलेगा और बाकी सब तो हाँफ-हाँफकर मर जाएँगे।

अतः इस स्पर्धा में तो कोई मूर्ख भी नहीं पड़ता। हाँ, यदि दो सौ-पाँच सौ घोड़ों को इनाम दे रहे हों तो अपना भी नंबर लग जाएगा ऐसा मान सकते हैं। लेकिन अरे, पहला नंबर तो लगने वाला है नहीं। तो फिर किसलिए बेकार यों ही इस 'रेस-कोर्स' में पड़ा है? सो जा ना, घर जाकर। इस 'रेस-कोर्स' में कौन उतरे? इनके 'रेस-कोर्स' में कहाँ उतरे? कोई घोड़ा कितना ज़ोरदार होता है! कोई चने खाता है, कोई घास खाता है!!

मैं इस संसार के 'रेस-कोर्स' में पड़ा ही नहीं। इसलिए मुझे 'भगवान' मिल गए!

(यह पढ़ने के बाद, चारों के मन में कई तरह के सवाल उठने लगे।)

राशि : क्या यह अन्याय नहीं है कि सिर्फ एक ही जीतता है और बाकी सब हारते हैं?

प्रोफेसर मैथ्यू : जब हम स्पर्धा करते हैं तब कितने जीतते हैं और कितने हारते हैं?

राज : एक जीतता है और बाकी सब हारते हैं।

प्रोफेसर : बिल्कुल सही कहा राज। लेकिन अनहेल्दी कॉम्पीटिशन में हम इस हद तक खो जाते हैं कि हम अपना मूल लक्ष्य भूल जाते हैं, अपने व्यक्तित्व को भी भूल जाते हैं।

राशि (मन में) : सच में। मैं पहले पढ़ने में बहुत होशियार थी लेकिन स्पर्धा के कारण मैं कहाँ से कहाँ पहुँच गई! मैंने अंकिता से सूपिरियर बनने के चक्कर में अपने आपको ही बदल दिया।

अंकिता (मन में) : मुझे स्पर्धा में सफलता तो मिली लेकिन मेरी वजह से राशि को मुझसे ईर्ष्या होने लगी।

राज (मन में) : मैंने फुटबॉल छोड़कर यूट्यूबर बनने में अपना समय बर्बाद किया। और फिर सिर्फ आकाश को हराने के लिए फुटबॉल टीम में शामिल हुआ।

आकाश (मन में) : मेरी और राज की मित्रता कब शत्रुता में बदल गई वह मुझे पता ही नहीं चला। अपनी टीम को जिताने के बजाय मैंने राज को हराने की कोशिश की।

प्रोफेसर मैथ्यू : तुम लोग इसके बारे में थोड़ा और सोचना। हम अगले हफ्ते फिर से मेरे ऑफिस में मिलेंगे।

सभी ने एक साथ कहा : ओके सर!! थैंक यू वेरी मच सर!

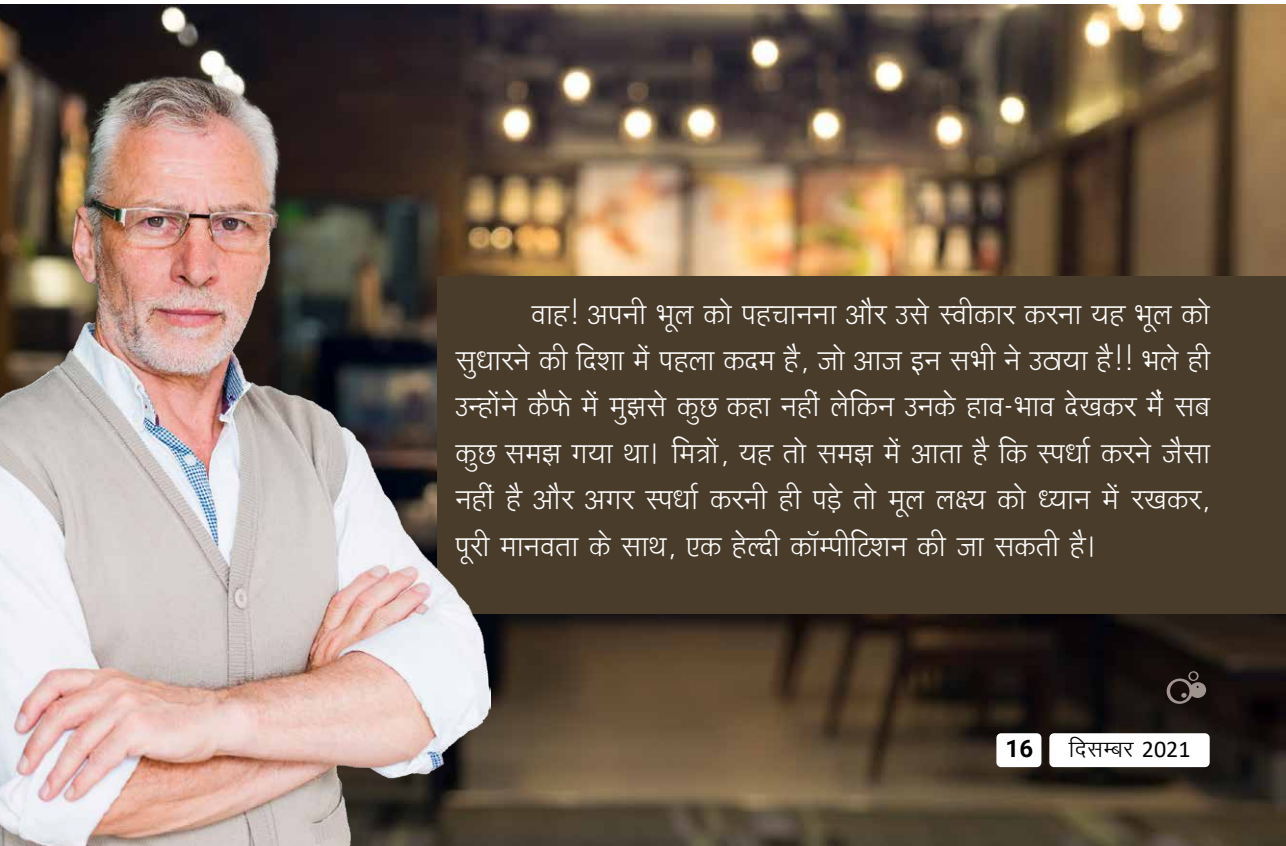

वाह! अपनी भूल को पहचानना और उसे स्वीकार करना यह भूल को सुधारने की दिशा में पहला कदम है, जो आज इन सभी ने उठया है!! भले ही उन्होंने कैफे में मुझसे कुछ कहा नहीं लेकिन उनके हाव-भाव देखकर मैं सब कुछ समझ गया था। मित्रों, यह तो समझ में आता है कि स्पर्धा करने जैसा नहीं है और अगर स्पर्धा करनी ही पड़े तो मूल लक्ष्य को ध्यान में रखकर, पूरी मानवता के साथ, एक हेल्दी कॉम्पीटिशन की जा सकती है।

एपिसोड 05

हेल्दी कॉम्पीटिशन

दृश्य 1- प्रोफेसर मैथ्यू के ऑफिस

(एक सप्ताह बाद, सभी प्रोफेसर मैथ्यू के ऑफिस में मिलते हैं)
(प्रोफेसर खिड़की के बाहर देख रहे थे।)

राज : क्या देख रहे हैं सर?

प्रोफेसर मैथ्यू : आ गए सब लोग? देखो वहाँ, खिड़की के बाहर। हाइवे पर दौड़ती हुई कार देख रहे हो?

राशि : हाँ सर। पर अचानक आप...?

प्रोफेसर मैथ्यू : बहुत बार ऐसा होता है न कि कोई कार तुम्हारी कार को ओवरटेक करके आगे निकल जाती है और तब तुम्हें गुस्सा आता है कि "मेरी कार को ओवरटेक किया!" फिर तुम भी स्पीड बढ़ाकर आगे निकलने की कोशिश करते हो।

आकाश : ऐसा तो हमेशा होता है, सर...मेरे साथ तो खास होता ही है!

प्रोफेसर मैथ्यू : क्या कभी ऐसा सोचा है कि हज़ारों कारें हमसे आगे गई होंगी और कितनी ही कारें हमारे पीछे आनी बाकी हैं। सचमुच तो हम तब तक स्पर्धा करते हैं जब तक हम उस कार को ओवरटेक नहीं कर लेते हैं। सिर्फ अपने अहंकार को संतुष्ट करने के लिए, राइट?

अंकिता : राइट सर, ऐसा तो कभी सोचा ही नहीं है!

प्रोफेसर : ऐसा करने के बजाय यदि हम अपना फोकस इस बात पर रखें कि जहाँ हमें पहुँचना हैं वहाँ हम टाइम से पहुचँ सके तो? मेरे कहने का तात्पर्य यह है कि हम अपनी कपैसिटि के अनुसार अपने लक्ष्य तक पहुँचने पर फोकस करें तो?

राशि : तो कोई ऐक्सिडेन्ट ही नहीं होगा सर! लेकिन लाइफ में कदम-कदम पर स्पर्धा तो हो ही जाती है। और इसमें हम अपना लक्ष्य भूलकर यही प्रयत्न करते हैं कि सामने वाले को किस तरह नीचा दिखाया जाए।

राज : सचमुच! और स्पर्धा में मित्र भी दुश्मन के समान लगने लगता है।

प्रोफेसर : यहाँ देखो, एक न्यूज़ आर्टिकल दिखाता हूँ।

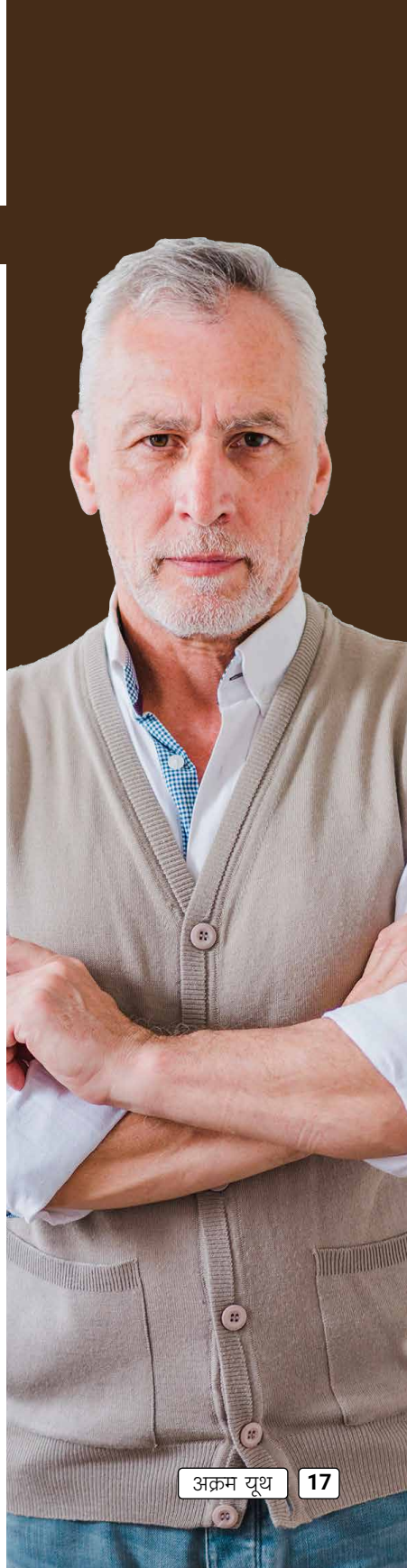

न्यूज़ पेपर

टोक्यो 2020 ओलंपिक्स : प्रतियोगियों ने दिखाई मानवता

ट्रैक पर 800 मीटर की रेस में ट्रैक पर दौड़ते समय यू.एस.ए के 'यशायाह ज्वेट ' और बोत्सवाना देश के 'निजेल अमोस' आपस में उलझकर गिर पड़ते हैं। तब एक-दूसरे पर क्रोधित होने और एक दूसरे की गलती निकालने के बजाय, दोनों एक-दूसरे को सपोर्ट करते हैं और एक साथ ही रेस समाप्त करते हैं।

ज्वेटः "हमें हार पर गुस्सा आता हो तो भी अंत में हमें वीरता दिखानी चाहिए। वीर, मानवता रखते हैं।"

इटली के 'जियानमारको ताम्बरी' और कतार के 'मुताज़ बर्शिम ' दोनों अच्छे मित्र थे। हाई जम्प के फाइनल में दोनों ने एक-दूसरे को बराबरी की टक्कर दी जिसमें टाई हुआ। ३ बार प्रयत्न करने के बाद भी किसी की जीत नहीं हुई, तब दोनों ने गोल्ड मेडल शेयर करने का निर्णय लिया और सच्ची मित्रता का उदाहरण दिया।

बर्शिम : "यह स्पर्धा से भी ऊँची बात है, जो हम नई जनरेशन को बताना चाहते हैं।"

ताम्बरी : "मित्र के साथ शेयर करने का मज़ा ही कुछ और है। एकदम चमत्कारिक।"

यू.एस.ए के 'कैलेब ड्रेसेल' को स्विमिंग की स्पर्धा में गोल्ड मेडल मिला। लेकिन उन्होंने अपना मेडल टीम के दूसरे स्वीमर 'बूक्स करी' को दे दिया, क्योंकि बूक्स ने प्रीलिम्स में ड्रेसेल की जगह तैरकर टीम को फाइनल तक पहुँचाया था।

ड्रेसल : "मैंने तो सिर्फ टी.वी पर देखा, लेकिन बूक्स वास्तव में मेडल के लिए ज्यादा लायक है।"

For 13 to 21 years Y- Boys

6th to 8th Nov

Festive Fuzion 2021

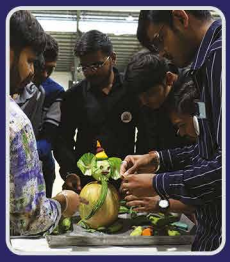

Fuzion Fuzion!! Festive Fuzion!!

- **700+ YMHTians**
- **50+ Centers**
- **15+ Festivals Celebrated**

Connect with Gnani

- **400+ YMHTians**
- **20+ Centers**

FUSION

For 13 to 21 years Y- Girls

9th to 11th Nov

Log on to youth.dadabhagwan.org

Responsive website compatible on all Browsers/Devices.

राज : अभी भी मुझे एक सवाल परेशान कर रहा है। हर जगह स्पर्धा है, जैसे कि पढ़ने में, खेल में, तो हमारा जीवन स्पर्धा रहित कैसे बन पाएगा?

प्रोफेसर मैथ्यू : मेरा भी यही प्रश्न था और मुझे इसका जवाब भी मिला। चलो, मैं आपको बताता हूँ।

ज्ञानी विद् यूथ

स्पर्धा के विरोध में इतना ही है कि, "नॉर्मेलिटी रखो"। कोई हमसे आगे निकल जाता है तो हमें खुश होना चाहिए।

प्रश्नकर्ता : जैसे बुद्धि के विरोध में एक वाक्य है कि "हुआ सो न्याय"! जो हर तरह से हमें बुद्धि के शिकंजे में से छुड़वाता है। तो स्पर्धा के विरोध में क्या है?

पूज्यश्री : स्पर्धा के विरोध में इतना ही है कि, "नॉर्मेलिटी रखो"। कोई हमसे आगे निकल जाता है तो हमें खुश होना चाहिए। हमारे ही स्कूल का विद्यार्थी आगे गया तो अच्छा हुआ। लेकिन 'मैं आगे आऊँ और वह पीछे रह जाए' तो यह स्पर्धा है!

प्रश्नकर्ता : लेकिन खुद को (आगे आने की) भूख तो होती ही है न!!

पूज्यश्री : लेकिन दूसरों को गिराकर क्यों आगे आना है? अपनी शक्ति से आगे बढ़ो और खुश हो। वह कितनी अच्छी तरह मेहनत कर रहा है! कितनी अच्छी बात है कि उसे टीचर के आशीर्वाद मिले है। अच्छा है कि वह उन्नति कर रहा है। 'उसकी तरह मैं भी आगे बढ़ूँ' ऐसा होना चाहिए। लेकिन उसको गिराकर ही मैं आगे बढ़ूँ ये तो संकुचितता कहलाती है। इसका मतलब यह हुआ कि मेहनत करके आगे बढ़ने की नीयत नहीं है।

और नज़दिक के सहपाठियों में ही स्पर्धा होती है। स्पर्धा करने के बजाय नोबिलिटी रखनी चाहिए। तुम भी आगे बढ़ो, सभी आगे बढ़ें और मेरी शक्ति के अनुसार मैं भी आगे बढ़ूँगा। लेकिन स्पर्धा में क्या होता है कि "मैं कम मेहनत करूँ और कम मार्क्स लाऊँ। लेकिन तुम बीमार हो जाओ और फेल हो जाओ ताकि मैं तुमसे आगे बढ़ जाऊँ"।

नियम कैसा है कि स्पर्धा से हम खुद अपना ही नुकसान करते है। अगर किसी के लिए मन में ऐसा हो कि 'उसका बुरा हो जाए, वो फेल हो जाए', तो सोचने वाले का ही बुरा होता है और वह फेल हो जाता है। कुदरत क्या कहती है कि अगर तुम कहते हो 'तू चोर है', तो कुदरत कहेगी, 'तू चोर है'। और अगर तुम कहते हो कि 'आप आगे बढ़ो' तो कुदरत कहेगी, 'आप आगे बढ़ो'। यह विज्ञान की जानकारी नहीं होने के कारण लोग स्पर्धा करते हैं और भाव बिगाड़ते हैं। 'उसका पतन हो तो अच्छा', 'उसे नुकसान हो तो अच्छा', 'वह आगे नहीं आना चाहिए', 'मैं ही हमेशा आगे बढ़ूँ 'ऐसे भाव करने से खुद का पतन होगा। और अगर ऐसी भावना करे कि 'तुम आगे बढ़ो...खूब आगे बढ़ो' तो खुद की बहुत ज्यादा उन्नति होगी।

तुम कहते हो कि 'आप आगे बढ़ो' तो कुदरत कहेगी, 'आप आगे बढ़ो।'

स्पर्धा में से ईर्ष्या का जन्म होता है। स्पर्धा तो बहुत बड़ा रोग है! खुद को आगे बढ़ना है और उसके आधार से मान खाना है। और कितनों को तो मोह के कारण ईर्ष्या होती है कि 'उसे अच्छा मिला और मुझे अच्छा नहीं मिला।' उसे जो मिला वह अगर बर्बाद हो जाए तो मेरा अच्छा हो जाए! ऐसे ईर्ष्या करने के बजाय स्पर्धा को ज़ीरो कर दो।

तो, क्या आपको आपके सवालों के जवाब मिल गए?

अंकिता : हाँ, दूसरों को गिराकर आगे बढ़ने के बजाय अब हम अपनी शक्ति से आगे बढ़ेंगे।

राशि : स्पर्धा में यदि दूसरे आगे बढ़ें तो उससे ईर्ष्या नहीं करेंगे बल्कि अच्छे भाव रखेंगे।

आकाश : हम नहीं जानते थे कि एक-दूसरे को सपोर्ट करके भी स्पर्धा की जा सकती है।

राज : अब से जब कभी भी ऐसी सिचुएशन आए कि जहाँ हमें स्पर्धा करनी ही पड़े तो वहाँ हम हेल्दी कॉम्पीटिशन करेंगे।

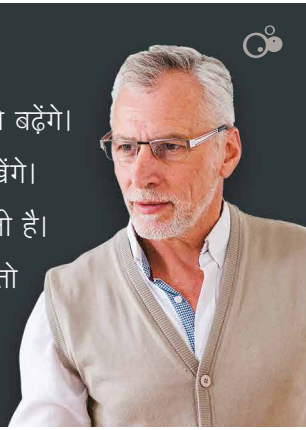

एपिसोड 06

कोई हमसे स्पर्धा करे तब?

दृश्य 1 - कन्वेन्शन सेन्टर

5-6 साल बाद

राज और राशि : हेलो सर! कैसे हैं आप? और यहाँ कैसे आना हुआ?

प्रोफेसर मैथ्यू : मैं बिल्कुल ठीक हूँ। एक प्रेज़न्टेशन के लिए यहाँ आया था। तुम दोनों कैसे हो?

राजः बहुत बढ़िया सर। आपके द्वारा बताई हुई चाबियाँ (सीख) हमें जीवन में बहुत मदद कर रही है।

राशि : हाँ, जब से आपने समझाया है तब से हम स्पर्धा होने वाले संयोगो में बहुत अलर्ट रहते हैं, लेकिन...

प्रोफेसर मैथ्यू : लेकिन क्या?

राशि : लेकिन कभी-कभी मुझे लगता है कि दूसरे लोग मुझसे स्पर्धा करते हैं।

राज : हाँ, और कभी-कभी ऐसा लगता है कि ईर्ष्या भी करते हैं। तब हमें क्या करना चाहिए?

प्रोफेसर मैथ्यू : उसका भी उपाय है।

(प्रोफेसर फोन पर एक वीडियो चलाकर उन्हें दिखातें हैं)

पूज्यश्री : यदि कोई व्यक्ति हमसे ईर्ष्या करता हो तो हमें उससे द्वेष नहीं करना चाहिए, बल्कि प्रार्थना करनी चाहिए कि 'हे भगवान! उसे सद्‌बुद्धि दीजिए, जिससे उसकी विपरीत बुद्धि छूट जाए।' हमें उसके साथ प्रेम से रहना चाहिए और जितना हो सके उसका सहयोग करना चाहिए।

प्रश्नकर्ता : यदि हम उसके साथ अच्छा व्यवहार करते हैं तो कुछ दिनों तक तो वह हमारे साथ अच्छा व्यवहार करता है, लेकिन फिर वैसे का वैसा!

पूज्यश्री : अगर हमारे अंदर अहंकार हो न, कि 'वह मेरे से ईर्ष्या करता है, मैं उसे देख लूँगा' तो वह हमसे और अधिक ईर्ष्या करने लगेगा। अतः हमें अपनी तरफ से उसके अंदर बैठे भगवान को प्रार्थना करते रहना चाहिए कि 'हे भगवान! मेरे निमित्त से उसे ईर्ष्या होती है, पर मुझे कोई राग-द्वेष नहीं करना है, ईर्ष्या में नहीं पड़ना है, मुझे समता रहे ऐसी शक्ति दीजिए। हे भगवान! उसे सद्बुद्धि दीजिए।' हमें पॉज़िटिव भावना करते रहना चाहिए। तो धीरे-धीरे एक समय ऐसा आएगा कि उसकी ईर्ष्या छूट जाएगी। यदि उसने खींचकर रखा हो और हम भी पकड़कर रखें तो ज्यादा खींचातानी होगी। अगर हम ढीला छोड़ देते हैं तो उसकी तरफ से भी ढीला पड़ जाएगा।

पूज्यश्री : मेरा अनुभव है कि यदि किसी को मेरा कुछ दुःखदायी लगता हो तो मैं पचास बार माफी माँगता रहता हूँ कि 'मेरे निमित्त से उसे दुःख न हो।' और फिर भी मेरे निमित्त से उसे दुःख रहता हो तो मैं हृदय से पछतावा करता हूँ, माफी माँगता हूँ। फिर धीरे-धीरे उसका मेरे निमित्त से दुःखी होना समाप्त हो जाता है।

राज और राशिः अब से हम ध्यान रखेंगे कि किसी को हमसे ईर्ष्या या स्पर्धा न हो, और यदि हो जाए तो हम भी प्रार्थना करेंगे, सर!!

प्रोफेसर मैथ्यू :

तो मित्रों, आपको यह वेब स्टोरी कैसी लगी? राज और राशि का तो स्पर्धा करना छूट गया। तो आप भी इस स्टोरी से मिली हुई चाबियाँ (सीख) इस्तेमाल करोगे ना?

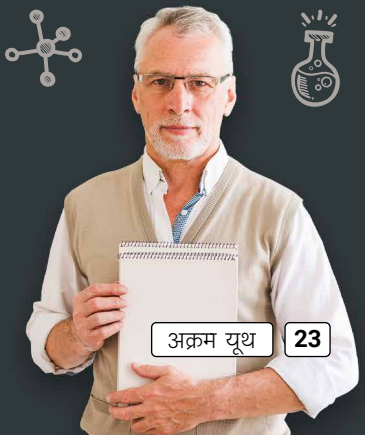

दिसम्बर 2021
वर्ष : 9, अंक : 8
अखंड क्रमांक : 104

#कविता

ज़िंदगी किसी रेस-कोर्स से कम नहीं है भाई!
दौड़ते तो सभी हैं, प्रथम कोई एक ही आता है भाई।

दूसरें करते हैं वैसा मैं भी करूँ, पड़ जाता है देखा देखी में हर कोई;
देखना कहीं पासा पलट न जाए, और खो बैठो अपने व्यक्तित्व को ही।

ज़माना स्पर्धा का है, मानता हूँ तुम्हारी बात;
लेकिन किसी के गिरने पर खुश होना, वह है संकुचित मन का काम।

दादा के युवाओं द्वारा

मत करो ईर्ष्या, पर करो उनके गुणों को अप्रीशीएट;
होंगे वैसे ही गुण भीतर प्रकट, और होगा तुम्हारा प्रोग्रेस।

करो प्रयत्न आगे बढ़ने का, लगाकर पूरा अटेन्शन;
सपोर्ट करना एक-दूसरे को, तो होगा वह हेल्दी कॉम्पीटिशन!

Send your suggestions and feedback at: akramyouth@dadabhagwan.org
Printed and Published by Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation-Owner.
Printed at : Amba Offset, B-99, GIDC, Sector-25, Gandhinagar – 382025.